ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 175-177
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-10, No.-I, Issues-11 YEAR- June -2019

महर्षि अरविन्द का विश्व एकता पर आधारित राष्ट्रवाद

अरुण कुमार तिवारी
एसोसिएट प्रोफेसर– राजनीति विज्ञान विभाग, मुनीश्वर दत्त स्नातकोत्तर महाविद्यालय, प्रतापगढ़ (उ0प्र0) भारत

Received- 08.05.2019, Revised- 12.05.2019, Accepted - 15.05.2019 E-mail: -draktiwariphh@gmail.com

सारांश : ***प्रस्तुत शोध–पत्र में मैंने यह देखने का प्रयास किया है कि श्री अरविन्द घोश के राष्ट्रवाद सम्बन्धी चिन्तन का प्रमुख आधार आध्यात्मिक क्यों है? वे राष्ट्रवाद के विचार में विश्व एकता के विचार को भी क्यों जोड़ते है? महर्षि अरविन्द घोष के राजनीतिक विचारों का मूल आधार उनकी आध्यात्मिक आस्था है। राष्ट्र एवं राजनीति के अध्यात्मीकरण का उनका विचार वास्तव में उनकी अन्तःकरण की प्रेरणा से उत्पन्न हुआ। श्री अरविन्द के विचारों को वैज्ञानिक दृष्टिकोण या विवेक के माध्यम से नहीं परखा जा सकता है। इसके लिए आस्था, श्रद्धा एवं अध्यात्म की आवश्यकता है। उन्होंने स्वयं कहा कि उन्हें ऐसा तत्व ज्ञान प्राप्त हुआ जिसमें उन्हें स्वयं ईश्वर द्वारा दिशा–निर्देश की अनुभूति होती है और वे उसी निर्देशन में कार्य करते थे। इसीलिए उनके राष्ट्रवाद के विचार का आधार भी अध्यात्म एवं ईश्वर है। उन्होंने संसार को ब्रह्मलीला माना है। वे संस्कृति को नैतिक तत्वों पर आधारित मानते हैं। धन–सम्पत्ति, ऐश्वर्य, एवं विलसिता की होड़ में राष्ट्र एवं व्यक्ति दोनों का पतन होता गया और उन्हें नैतिक शक्तियों एवं तत्वों का बोध नहीं रह गया। इसे ही सर्वनाश की प्रकृति कहा जा सकता है। महर्षि अरविन्द के अनुसार इससे बचने का एकमात्र उपाय नैतिक गुण एवं अध्यात्म है। इसीलिए राष्ट्रवाद को फलने–फूलने के लिए आध्यात्मिकता एवं नैतिक धर्म की आश्यकता है। महर्षि के अनुसार भारतवासियों को इसी अध्यात्म एवं नैतिक मार्ग पर चलना चाहिए।***

कुंजीभूत शब्द– :–राष्ट्रवाद सम्बन्धी, चिन्तन, आध्यात्मिक, विचार, एकता, राजनीतिक विचारों, मूल आधार ।

महर्षि अरविन्द एक राष्ट्रवादी चिन्तक होने के साथ–साथ अपने विचारों में कुछ उग्र थे। वे भारत की पूर्ण स्वाधीनता की इच्छा रखते थे। इसीलिए उन्हें स्वतन्त्रता आन्दोलन के उदारवादियों की प्रार्थना एवं ज्ञापन की नीति बिल्कुल भी पसन्द नहीं थी। उन्होंने लिखा है कि "पूर्ण स्वाधीनता से कम राजनीतिक लक्ष्य भारत की महानता के विपरीत था। प्रत्येक राष्ट्र को स्वाधीन रहने का अधिकार है फिर भारत को पराधीनता में जकड़े रखना और एक घटिया प्रकार की सभ्यता में परिवर्तित करने का विदेशी प्रयास कैसे सहन किया जा सकता है"। भारतीय स्वाधीनता के प्रबल पक्षधर महर्षि अरविन्द को उदारवादियों की 'ब्रिटिश न्यायप्रियता में निष्ठा' का विचार बिल्कुल भी पसन्द नहीं था। उन्होंने कहा कि भारतीयों के अंग्रेजों के साथ सम्बन्ध कोई ईश्वरीय वरदान नहीं है। इस अंग्रेजी शासन से पूर्ण मुक्ति ही प्रत्येक भारतीय का लक्ष्य होना चाहिए। इस प्रकार उनके विचारों से यह स्पष्ट है कि आध्यात्मिक होने के साथ–साथ वे भारत राश्ट्र की स्वाधीनता का हर संभव प्रयास करते रहे।

महर्शि अरविन्द ने स्वाधीनता के लिए 'निष्क्रिय प्रतिरोध' की नीति का भी उपदेष दिया। निष्क्रिय प्रतिरोध से उनका तात्पर्य किसी अहिंसक आन्दोलन से नहीं था। उन्होंने दृढ़ता से यह प्रतिपादित किया कि "भारत राष्ट्र अपनी स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए हिंसा का मार्ग भी अपना सकता है। यह इस बात पर निर्भर करेगा कि तत्कालीन परिस्थितियाँ क्या राष्ट्र को अन्य किसी नीति का पालन करने के लिए बाध्य करती हैं"। श्री अरविन्द के इन विचारों को देखकर ही श्री निवास आयंगर ने लिखा है कि महात्मा गाँधी की नैतिक एवं अहिंसा की धारणा को स्वाधीनता आन्दोलन के लिए वे उपयुक्त नहीं मानते थे। महर्षि अरविन्द राष्ट्र की स्वतन्त्रता के लिए भगवद्गीता के क्षात्रधर्म का अनुसरण करने की बात करते हैं। उन्होंने कहा कि धर्म भी यही कहता है कि आवश्यकता पड़ने पर राष्ट्र के शत्रुओं का संहार करना धर्मयुद्ध है। एक सीमा के बाद साधुवृत्ति एवं त्याग पर राजनीति को आधारित करना वर्णसंकरता का प्रतीक है। महर्षि अरविन्द के इन विचारों से यह स्पष्ट है कि आध्यात्मिक, धार्मिक, मानवीय मूल्यों में अटूट आस्था रखने वाले तथा नैतिकता का पुरजोर समर्थन करने के बावजूद वे राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए किसी भी हद तक जाने को तैयार थे। एक सशक्त एवं स्वाधीन भारत राष्ट्र की कल्पना उनके विचारों में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

महर्षि अरविन्द एक धार्मिक एवं आध्यात्मिक चिन्तक

थे इसलिए वे सनातन धर्म को राष्ट्रवाद की संज्ञा देते हैं। वास्तविकता यह है कि श्री अरविन्द के विचारों में जिस मानवीय एकता एवं राष्ट्रवाद का आदर्श दिखाई देता है वह ऋग्वेद एवं उपनिषदों पर आधारित है। उन्होंने राष्ट्रवाद एवं राष्ट्र पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि "हिन्दू राष्ट्र सनातन धर्म के साथ उत्पन्न हुआ था और उसी धर्म के साथ ही भारत राष्ट्र गतिशील है। यदि सनातन धर्म न होता तो भारत राष्ट्र भी जीवित नहीं रहता। राष्ट्र अमर है। जब धर्म का पतन होगा तो भारत राष्ट्र भी अवनति की ओर अग्रसर होगा। राष्ट्र के रूप में भगवान का अवतार होता है। भारत के तीस करोड़ निवासी ईश्वर हैं। राष्ट्र को भू–भाग, धन एवं जनसंख्या से नहीं मापा जा सकता है"।

श्री अरविन्द का राष्ट्रवाद धार्मिकता एवं अध्यात्म पर अवश्य आधारित है किन्तु यह संकुचित दृष्टिकोण वाला राष्ट्रवाद नही है। उनका राष्ट्रवाद एवं देशभक्ति का विचार प्रेम एवं विश्वबन्धुत्व पर आधारित है। उन्होंने कहा कि हम अपने राष्ट्र के संकीर्ण दायरे में नहीं रहना चाहते। हमारी एकता का आदर्श केवल भारत नहीं अपितु विश्व की एकता का आदर्श है। समस्त मानवता का एकीकरण हमारा लक्ष्य है। यह एकता राजनीतिक एवं प्रशासनिक उपायों से नहीं अपितु आध्यात्मिकता से ही उत्पन्न होगी। उनके इस कथन से स्पष्ट है कि अध्यात्म एवं धर्म जिस नैतिकता, सहिष्णुता, मानवता एवं सहयोग की बात करता है उसके बिना किसी भी राष्ट्रवाद की कल्पना नहीं की जा सकती। राष्ट्रवाद की मजबूती के लिए विश्व एकता का विचार और समन्वय की भावना भी आवश्यक है। जिस विश्व एकता के आदर्श को उन्होंने सामने रखा आज वह सभी राष्ट्रों के लिए प्रासंगिक है।

महर्षि अरविन्द ने भारत के लिए पुर्नजागरण के विचार का प्रतिपादन किया। वे भारत की प्राचीन आत्मा, पद्धति एवं आदर्शो को पुर्नजीवित करने की बात करते हैं। पश्चिमी देशों के अन्धानुकरण की नीति उन्हें बिल्कुल भी प्रिय नहीं थी। किन्तु वे रूढ़िवादी भी नही थे। उनका मत था कि "पश्चिम से ग्रहण करने योग्य विचारों को अपनाया जा सकता है। किन्तु इस बात का ध्यान रखना होगा कि हम ईश्वर के कानून में निष्ठा रखते हुए पूर्ण भारतीय भी बने रहें। हम जो कुछ पश्चिम से ग्रहण करें वह एक भारतीय के रूप में ही करें। अपना अस्तित्व विस्मृत न कर दें"। महर्षि के ये विचार उनकी प्रखर राष्ट्रभक्ति के प्रतीक हैं। संकीर्ण दृष्टिकोण रखने वाले लोगों ने इसे हिन्दू राष्ट्रवाद माना। किन्तु यदि इसे व्यापक दृष्टि से देखा जाय तो राष्ट्रीय चेतना को जागृत करने के साधन के रूप में प्रयुक्त किया गया। राष्ट्रीय चेतना एवं राष्ट्रवाद उन्हीं तत्वों से जागृत की जा सकती है, जिन तत्वों को देश के बहुसंख्यक जन–समुदाय का समर्थन प्राप्त हो। इसीलिए श्री अरविन्द ने भारतीय राष्ट्रवाद के विचार को अध्यात्म एवं धर्म से जोड़ने का कार्य किया।

महर्षि अरविन्द राष्ट्र एवं राज्य को पृथक्–पृथक रखने के विचार का प्रतिपादन करते हैं। वे राज्य को केवल एक यंत्र की तरह मानते हैं और राष्ट्र के सांस्कृतिक, बौद्धिक तथा सामाजिक विकास में शासन के हस्तक्षेप को अनुचित मानते हैं। उनके अनुसार "राष्ट्रवाद पूरी तरह राजनीतिक एवं आर्थिक अवस्थिति नहीं है। भारतवर्ष केवल एक भौगोलिक क्षेत्र मात्र नहीं है, यह माता की तरह है। राष्ट्रवाद एक सात्विक धर्म है। राष्ट्रवाद आध्यात्मिक एवं नैतिक आदर्शवाद पर आधारित है। राष्ट्र एक मनोवैज्ञानिक इकाई है। राष्ट्र के लिए राजनीतिक एकता आवश्यक नहीं है। राष्ट्र एक जीवंत समूह एवं समष्टिगत मानवता है"। इस प्रकार नैतिक आदर्शवाद, अध्यात्म, धर्म, संस्कृति एवं बौद्धिकता आदि तत्वों के आधार पर उन्होंने राष्ट्र को राज्य से भिन्न माना है। राष्ट्रीयता एक भावना प्रधान विचार है किन्तु स्वराज्य एवं स्वदेशी द्वारा राजनीतिक एवं आर्थिक कार्यो को नियमित किया जा सकता है। राष्ट्रवाद केवल एक राजनीतिक कार्यक्रम नहीं है। राष्ट्रवाद एक ईश्वर प्रदत्त धर्म है। श्री अरविन्द के अनुसार केवल बौद्धिक धारणा के रूप में अपने आपको राष्ट्रवादी कहलवाना पूरी तरह अनुचित है। राष्ट्रवाद और राष्ट्रीय चेतना पर बल देते हुए महर्षि अरविन्द ने कहा कि "राष्ट्रीय क्रिया–कलाप एक निष्काम कर्म है। राष्ट्रवाद का धर्म से अटूट सम्बन्ध है। यह ईश्वरीय कृपा से निकला हुआ एक अभय मार्ग है। यूरोपीय सन्दर्भ का राष्ट्रवाद केवल भौतिक परिवर्तन तक ही सीमित है। स्वशासन की स्थापना तब तक निरर्थक है जब तक हम अपने राष्ट्र को विशिष्टिता प्रदान नहीं करते और जनता को वास्तविक स्वतन्त्रता और सुख नही दिलाते"। इस प्रकार महर्षि की राष्ट्रवाद की अवधारणा देशभक्ति से अधिक व्यापक अवधारणा है। उनका दृष्टिकोण राजनीतिक नहीं आध्यात्मिक था। उनके राष्ट्रवाद को संकीर्ण कहना ठीक नहीं है। वह जनजागरण के लिए आवश्यक एवं तत्कालीन परिस्थिति के अनुकूल था।

महर्षि अरविन्द एक राष्ट्रवादी विचारक होते हुए भी विश्व एकता के आदर्श के प्रतिपादक थे। वे अन्तर्राष्ट्रीयता के धरातल पर राष्ट्रवाद को प्रस्तुत करना चाहते थे। उनके राष्ट्रवाद को केवल हिन्दू राष्ट्रवाद करना उचित नहीं है क्योंकि वे भारत के अल्पसंख्यक वर्गो का राष्ट्रवाद के लिए समुचित समर्थन आवश्यक मानते थे। वे भारतीय राष्ट्रवाद के विकास में हिन्दू धर्म तथा इस्लाम दोनों को

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-10, No.-I, Issues-11 YEAR- June -2019

राजनीतिक जीवन के लिए जागृत करना चाहते थे। महर्षि का राष्ट्रवाद किसी भी सम्प्रदाय या धर्म को अछूत नहीं मानता। उनका कहना है कि किसी भी प्रकार की चेतना का नवजागरण राष्ट्रवाद के लिए बाधक नहीं, अपितु सहायक ही है। उनके इस प्रकार के राष्ट्रवादी विचारों को ध्यान में रखकर यह कहा जा सकता है कि उन्हें संकीर्ण राष्ट्रवाद की श्रेणी में न रखकर राष्ट्रवाद के नवीन व्याख्याकार एवं परम उदार राष्ट्रवादी के रूप में याद किया जाना चाहिए। श्री अरविन्द विश्व राजनीति के वैचारिक मतभेदों, शस्त्रों की होड़ एवं शीतयुद्ध आदि के बावजूद यह मानते थे कि किसी न किसी दिन विश्व एकता का आदर्श जरूर वास्तविक रूप लेगा।

विश्व एकता के लिए कुछ ठोस तर्क देते हुए महर्षि अरविन्द ने कहा कि मानव के वर्तमान तथा भविष्य की आवश्यकतओं की पूर्ति करने, प्राकृतिक कारणों एवं परिस्थितियों के दबाव की वजह से एक न एक दिन विश्व एकता की स्थापना अवश्य होगी। वाह्य आक्रमण के भय का निवारण करने के लिए मानव समुदायों में एकता की भावना का उत्पन्न होना स्वाभाविक है। उन्होंने विश्व एकता के विचार को आगे बढ़ाते हुए कहा कि विश्व में युद्धों की संभावनाओं को कम करके जन सामान्य के जीवन स्तर को ऊँचा उठाना एक आवश्यकता है। मानवतावादी उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए विश्व में स्वतन्त्रता, समानता एवं सहअस्तित्व का वातावरण आवश्यक है। मानवीय समाज में बृहत् मानव समूहों का निर्माण एक प्राकृतिक प्रक्रिया है। अतः ऐसा समय भी शीघ्र ही आयेगा जब विश्व एकता एक स्वप्न नहीं अपितु यथार्थ होगा। इस प्रकार वे राष्ट्रवाद के साथ–साथ विश्व एकता के समर्थक चिन्तक थे। विश्व एकता से राष्ट्रवाद सुरक्षित एवं समुन्नत होगा।

उपरोक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि महर्षि अरविन्द एक आध्यात्मिक राष्ट्रवाद के प्रतिपादक हैं। उसके पीछे बहुसंख्यक जन समूह का समर्थन प्राप्त करके भारत राष्ट्र को सुखी एवं स्वतन्त्र बनाना था। उनकी राष्ट्रवादी विचारधारा में राज्य को कोई विशेष महत्व नहीं दिया गया। उन्होंने राज्य को भौतिक उद्देश्यों की प्राप्ति का साधन माना। जबकि स्थायी सुख–शान्ति के लिए व्यक्ति का आध्यात्मिक होना आवश्यक है। यह भी निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि उनके विचारों का आधार व्यापक व्यक्तिवाद है। उनका व्यक्तिवाद मानव गरिमा को सुरक्षित रखने वाला है न कि व्यक्ति का भौतिक विकास करने वाला। उन्होंने विश्व एकता की आवश्यकता का प्रतिपादन करते हुए यह माना कि यह एकता मानव जाति के सम्पूर्ण विकास के लिए आवश्यक है। यह राष्ट्रवाद के मार्ग का कोई बाधक तत्व नही है।

शोध–पत्र का सारांश– महर्षि अरविन्द ने जिस राष्ट्रवाद के विचार का प्रतिपादन किया वह एक आध्यात्मिक एवं धार्मिक राष्ट्रवाद है। उन्होंने भारत राष्ट्र को माता के रूप में स्वीकार किया। आध्यात्मिक लोगों में वैचारिक स्थिरता, न्याय, समानता, स्वतंत्रता एवं दूरदृष्टि प्रदान करता है जो किसी भी राष्ट्र के लिए आवश्यकता शर्तें हैं, इसलिए राष्ट्रवाद का विचार आध्यात्मिकता पर आधारित होना चाहिए। राज्य जो केवल आर्थिक एवं भौतिक आवश्यकताओं को प्रमुखता प्रदान करता है, उसके बिना भी राष्ट्रवाद एवं राष्ट्र की भावना को जगाया जा सकता है। इस प्रकार श्री अरविन्द के राष्ट्रवाद में विश्व एकता एवं आध्यात्मिकता आवश्यक तत्व हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. श्री अरविन्द घोष : 'The Doctrine of Pas sive Reisstance', श्री अरविन्दों आश्रम, पाण्डिचेरी, 1952, पृष्ठ–69–70
2. श्री अरविन्द : 'Speeches', आर्य पब्लिशिंग हाउस, कलकत्ता, 1922, पृष्ठ–173
3. श्री अरविन्द : 'The Doctrine of passive re sistance', वही, पृष्ठ–73
4. श्री निवास आयंगर : 'Shri Aurobindo', आर्य पब्लिशिंग हाउस, कलकत्ता, 1945, पृष्ठ–168
5. महर्षि अरविन्द : 'Essays on the Gita', वही, पृष्ठ–290
6. महर्षि अरविन्द : 'उत्तरपाड़ा स्पीच', वही, पृष्ठ–29–30
7. महर्षि अरविन्द : The Ideal of Human Unity, श्री अरविन्दो बर्थ सेन्टेनरी लाइब्रेरी, पाण्डिचेरी, 1971, पृष्ठ–479
8. महर्षि अरविन्द : 'द' आइडियल ऑफ कर्मयोगिन', आर्य पब्लिशिंग हाउस, कलकत्ता, 1921, पृष्ठ–7
9. महर्षि अरविन्द : 'The Ideal of Human Unity', वही, पृष्ठ–280
10. महर्षि अरविन्द : 'Speeches', आर्य पब्लिशिंग हाउस, कलकत्ता, 1922, पृष्ठ–18–19
11. करण सिंह : प्रोफेट ऑफ इण्डियन नेशनलज्मि', भारतीय विद्या भवन, बम्बई, 1970, पृष्ठ–83

*****